

मनोरञ्जन
अर्थात्
दिलबहलाव.

मनोरञ्जन एवम्
दिलबहलाव.

जिसमें-सुन्दर कवित्त, गज़ल और भजन आदि हैं।

रचयिता-मुंशी जगन्नाथ सहाय जमींदार।

मसहफ़ शاعر شیرین زبان فارسی اردو ناگری انگریزی دان مجموعہ لیاقت پیراے
منشی حکیمناथ سہاے صاحب زمیندار

حصہ اول و دوم

مؤلف آئندہ ساگر کھیا شاخلف منشی بشن پرشاد صاحب مرحوم وکیل عدالت و اردو محکمہ
بازار کلان ہزاری بلغ ضلع ہذا حسب صحت و فرمائش منشی موصوف

پانچویں بار
بمقام لکھنؤ محلہ حضرت گنج

لکھنؤ

کےسریदास सेठ द्वारा

नवलकिशोर प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित।

सन १९२४ ई०

باہتمام کیسری داس پبلشرز

مطبع نامی منشی نوکشور میں طبع ہوا

اعلان حق تالیفات کتاب کا بحق نوکشور پریس محفوظ ہے

श्रीगणेशाय नमः

मनोरञ्जन

दोहा

श्रीगणपति गुरु बन्दि पद मन रञ्जन मुखदाय ।
जगन्नाथ अब रचत है नामावली बनाय ॥ १ ॥
मनरञ्जन विख्यात भा दिलबहलाव बखान ।
तत्वरु सन्ध्या ग्रह निशा संवत संख्या जान ॥ २ ॥
हों सुत विष्णुप्रसाद को जगन्नाथ मम नाम ।
रहों हजारीबाग में जन्मभूमि यह ठाम ॥ ३ ॥
जगन्नाथ बहु पदन में होत गान में भंग ।
ताते जन जगन्नाथ अस बहुपद लिख्यो अभंग ॥ ४ ॥

१ पुस्तक का नाम ।

कवित्त घनाक्षरी ।

बीती जाती है बयस कीन्हे हरि भक्ति विना सोवत
 क्यों मोह रैन तनिक नैन खोलो । धोखे यमदूत आय
 काल समाचार पाय देहैं तब दंड अभी भरमत क्यों
 डोलो ॥ गोकुल के कृष्ण नाथ राधानाथ दीनानाथ
 ताहि भजो जगन्नाथ जात दिन अमोलो । काटें भव
 मन्द फन्द मोहन आनन्द कन्द बृन्दावनचन्द अबहुँ
 कृष्णचन्द बोलो ॥ १ ॥ बंशी कर राजैं गर गुंज माल
 शोभा जाल मूरति रसाल ब्रजनारिहीं लोभायो है ।
 मुकुट की चटक से आंखन की मटक से बातन की लटक
 से चित्त को चोरायो है ॥ लीन्हे संग ग्वाल बाल कीन्हे
 सब को निहाल प्रेमरूप नन्दलाल प्रेम को दिखायो है ।
 भाषैं कवि जगन्नाथ प्रीति की प्रतीति नाथ माखन चखन
 दांव लाखन लगायो है ॥ २ ॥ जाके गुण गनतहिं शेष
 शारदाहु थाके पावत न ध्यान मुनि पीत वास जाके हैं ।
 सीम मुखमा के मुखमा के नित जाके लखे बालकोलि
 पाके नहिं आन उपमा के हैं ॥ चौरैं नित छाके जाके

गेह जाके ताके करै अचरज बांके संग गोपबाल वाके हैं ।
जगन्नाथ ताके गुणहिं छाके रहत पाके पाय नाके शमाके
बंद्य शंभू उमा के हैं ॥ ३ ॥ मथुरा में जन्म लीन्ह गोकुल
प्रस्थान कीन्ह गोपी गृह जाय जाय माखन चोरायो है ।
गोपी यशुदा सुनाहि माता कान्हू बुझाहि क्यों तुम
गोपाल जाय माखन लुटायो है ॥ मुसकै यों कहत
कान्हू भूठी ये कहैं आय हम कैसे सीका पर बासन को
पायो है । भाषैं जगन्नाथ करो प्रेम ब्रजनाथ पद प्रेम के
विवश नाम चोरहु धरायो है ॥ ४ ॥ एक समय राधिका
दुहावैं गो मोहन ते एक सखी हँसी कीन्हि हँसि के
पुकारी है । मोहित छवि मोहन मुर्झाय गिरीं प्यारी जी
हँस्योरी हमें उरग कीन्हों मिस भारी है ॥ ताहि समय
ललिता कीर्त्योदाते जाय कही वीर विष भारे में चतुर
श्रीबिहारी है । जगन्नाथ धाई वह ल्याई गिरिधारी कहैं
बंशी तनलावत छवि देखि उठी प्यारी है ॥ ५ ॥ एक
समय प्यारी संग सखियां भरोखे बैठि देखें चन्द्रानन निज
ऐना निज ऐना हैं । शोभा मुख अलक पलक कैसे

कोऊ कहै राधा तनु आधा वा साँवरे सुनैना हैं ॥ औ-
 चकहीं नन्दलाल मूंदे तहँ जाइ नैन पूछे जानि कोउ
 बैन देते हरि सैना हैं । कबि जगन्नाथ जानी छवि खानी
 मुसकानी कहै बानी लाल तुम बिनु कहँ चैना हैं ॥ ६ ॥
 मंडल रास भारी जहाँ मोर मुकुटधारी लीन्हें बंशी
 प्यारी सुर गाते गिरिधारी हैं । चहँ ओर ब्रजनारी तन
 फूल रंग सारी सजी नखते शिख लौं गोप की कुमारी
 हैं ॥ भाषै कबि जगन्नाथ ऐसे सब सखी बीच बालक
 तनधारी श्रीकुंज के बिहारी हैं । संग कीर्ति की कुमारी
 जेहि कीरति भूभारी श्रीकृष्ण प्राणप्यारी श्रीराधिका
 दुलारी हैं ॥ ७ ॥ मंडल रास भारी जहाँ मोरमुकुटधारी
 लीन्हें बंशी प्यारी सुर गाते गिरिधारी हैं । चहँ ओर
 ब्रजनारी तन फूल रंग सारी सजी नखते शिख लौं गोप
 की कुमारी हैं ॥ भाषै कबि जगन्नाथ ऐसे सब सखी बीच
 बालवेषधारी छवि श्याम कीन्हि न्यारी हैं । बिहारी
 बीच प्यारी कीधौं प्यारी बिच बिहारी कै बिहारी ही
 प्यारी कै प्यारी ही बिहारी हैं ॥ ८ ॥ होरी को दिवस

आये भोरी लेइ ग्वाल बाल चले संग नन्द लाल आये
 बरसाने हैं । आवतहीं ग्वाल लाल राधा संग बाल लाल
 लाई पिचकारि लाल मोहन हर्षाने हैं ॥ छोड़त अवीर
 लाल डारत गुलाल लाल भयो रंग लाल लाल खेल
 में भुलाने हैं । हो गये घर द्वार लाल बीथी बाजार
 लाल हर्षित है जगन्नाथ कौतुक बखाने हैं ॥ ६ ॥ राम
 औ रमैया कहो कृष्ण औ कन्हैया कहो वेधनुहां गहैया ये
 बाँसुरी बजैया हैं । उन्हें कौशल्या मैया इन्हें यशुदा लें
 बलैया वे औधके बसैया ये गोकुल बचैया हैं ॥ उत
 लखन हैं सहैया इत दाऊ से भैया वे राज के करैया ये
 कामरी ओढ़ैया हैं । भाषैं जगन्नाथ कवि भजो दोनों
 नाथ छवि जैसे रघुरैया इत वैसेही कन्हैया हैं ॥ १० ॥
 शंकर श्रीमहादेव सेवैं सुर सिद्ध जाहि अंग भस्म शीश
 गंग नील कण्ठ जाके हैं । लपटे हैं गले ब्याल ओढ़ैं
 तन व्याघ्र छाल गिरिजा अर्द्धग संग भंग रंग छाके हैं ॥
 बाहन है बैल जासु बास है कैलास जासु पीवन को
 कालकूट देवन में बाँके हैं । भाषैं कवि जगन्नाथ होवत

नाहीं प्रसन्न शीघ्र पीय पद्मा के जैसे पति उमा के
 हैं ॥ ११ ॥ बातें ते बनत बात बातें ते बिगिरि जात बात
 हीं ते बावरो नाम जगत पावत । बातें बिनु बिकल रहें
 बातें ते हर्ष बढ़ें बातें ते काज सिद्ध पावत मन भावत ॥
 बातहीं ते पान खात बातहीं ते लात खात बातहीं ते
 ज्ञानी अज्ञानी परखि आवत । जगन्नाथ बात महँ करा-
 मात हैं अनेक बात कीतो करामात थोरी यह गावत ॥ १२ ॥

अथ सवैया भाषा औ फारसी

एक समय शैलजा के पती जनु रूप यती प्रभु जग
 दुखभंजन । गंग बसर तन खाक असर दीदार मरा
 दरदाद बगुलशन ॥

گنگ بسر تن خاک اثر دیدار مرا در داد به گلشن -

भा जगन्नाथ लाखि ठाढ़ तबै सपने महँ किय शिव के
 पग बन्दन । दीदे जमाल शुद्ध मुख हाल जहूर मलाल
 शदे पसे रक्तन ॥ १ ॥

دیدہ جمال شدم خوشحال ظهور ملال شدہ پس رक्त -

सर्वैया भाषा फारसी और अंगरेजी

कब अब भाग उदय होइ है कै बीनम जलवये कृष्ण कन्हारि ।

کب اب بھاگ اُدے ہوئی ہے کے بینم جلوۂ کرشن کنھاڑی۔

पूरिहि तब अभिलाष मेरी जब होय दरश श्रीपति यदुराई ॥

پورہ تب ابھلاکھ میری جب ہوے درش شری پت جدراڑی۔

होहु प्रगट अब सखियन संग डूनाट डिले सन्तन मुखदाई ।

Do not delay.

सुनु हे यदुनंदन कंसनिकन्दन जी जगन्नाथ मलूल
चेराई ॥ २ ॥

سنو ھے جدنندن کنس نکندن زین جگوناٹھ ملول چہ راڑی۔

जय गिरिजा वर जय काशीपति जय शंकर कैलास
निवासी । जगन्नाथ जन आस्त महँ शरणागत है तुम्हरो
अबिनासी ॥ तुमसे कंहा गति मेरी छपी जो मैं नाथ
कहौं सब बात प्रकासी । दुःख हरो मम शत्रु दलो निज
धाम रखहु काटहु यमफाँसी ॥ ३ ॥ जबते हरि जन्म
दियो हम को सुखते दिन रैन बितावत हौ । तुम आपन
दास बिचारि सदा हमरी सब आश पुरावत हौ ॥ जब

कष्ट भयो अब घोर महा तब काहे को दृष्टि दुरावत हो ।
 जन जगन्नाथ कर दुःख हरो अब काहे बिलंब लगावत
 हो ॥ ४ ॥ निज मातु पिता को कष्ट हस्यो औ यशुदा
 नन्द को शोच मिटाये । डूबन ते ब्रज राखि लियो तुम
 हीं गज ग्राह से धाड़ छुड़ाये ॥ द्रौपदी प्रह्लाद पै कीन्हि
 कृपा बिष पीयत मीरा प्राण बचाये । वैसहिं दुःख मेरो
 हरिये हरि जगन्नाथ जन क्यों बिसराये ॥ ५ ॥ कैधों नहिं
 प्रीति मेरी प्रभु से कैधों कल्लु चूक भई तो क्षमो । कैधों भाल
 लिखेऊ बिधि संकट जो प्रभुते नहिं होत कमो ॥ कैधों प्रभु
 मोहिं भूलि गये जो यहि बिधि है आरत हम को । पैहों
 तो नाहिं तुम्हें बिसरौं तुम जगन्नाथ कहँ जैसे रखो ॥ ६ ॥

शंकरहार छन्द

चंच कृदि चन्द्र बदनी चितवे शंश कृदि श्याम पथ बिल-
 खाये । द्दं कृदि द्वारिका बिप्रगये मंम कृदि मिलन
 हरि ना पाये ॥ पंप कृदि प्रेमबश शोच करै नन कृदि
 नाथ रथ चढ़ि आये । कंक कृदि कहत कवि जगन्नाथ रं
 कृदि रुकमिणी हर लाये ॥ १ ॥

छप्पै ।

श्रीराधा बलि जाउँ चरण यदुनन्दन जोरी । श्री-
राधा बलि जाउँ चरण बृषभानकिशोरी ॥ श्रीराधा
बलि जाउँ चरण शशिमुखी सुबैनी । श्रीराधा बलि
जाउँ चरण मृगशावकनैनी ॥ बलि जाउँ राधिका
तव चरण, सहित श्याम पातक हरण । बलि जाउँ
राधिका तव चरण, जगन्नाथ राखहु शरण ॥ १ ॥
महाराज बलि जाउँ शम्भु कैलासनिवासी । महाराज
बलि जाउँ शंभु सबके घटबासी ॥ महाराज बलि जाउँ
शम्भु गिरिजा अर्द्धंगी । महाराज बलि जाउँ शम्भु सब
के दुखभंगी ॥ बलि जाउँ शंभु संकट हरण, श्रीगौरी
युत खलदमन । बलि जाउँ शम्भु गिरिजारमन । जग-
न्नाथ के दुख शमन ॥ २ ॥

अथ भजनारंभ राग देश
श्रीबालकृष्ण के दरश बिना जिय विकल होत है
भारी ॥ ध्रु० ॥ क्षीरसिन्धु में शयन करावत शेष फणा
विस्तारी । निशि दिन रमा पलोठति चरणन जै श्रीपति

गिरिधारी ॥ १ ॥ देव देव गोलोक निवासी जपत जाहि
 त्रिपुरारी । धरणीभार हरण के कारण भये सो नरतन-
 धारी ॥ २ ॥ सन्तन दरश जानि जिय माहीं अधमन
 तरण विचारी । पुरुषोत्तम पुर जाइ बिराजे कलियुग
 अधम उधारी ॥ ३ ॥ सब घटबासी अन्तर्यामी भक्तन
 के दुखहारी । जगन्नाथ को दुखित जानि के चितवहु
 पलक उधारी ॥ ४ ॥ १ ॥

राग सौरठ

तुम देखो ऐसे दीनदयाल कन्हाई ॥

ध्रु० ॥ जन्म लेत देव की बसुदेवहिं बेंड़ी दीन्हि कटाई ।
 यद्यपि विष पूतना पिलायो तदपि मातु गति पाई ॥ १ ॥
 डूबत गोकुल भर अति भारी व्याकुल ब्रज समुदाई ।
 नखपर टेकि गोबर्द्धन राखेव बिपति सबै बिसराई ॥ २ ॥
 कमल पुष्प यमुना ते लाये यशुदा नन्द सहाई । कंस
 रजाके भय सब टारे मारि असुर दुखदाई ॥ ३ ॥ रुक्मिणि

१ जवाब ॥ कबीर दीन्हो तीनों मैं तार मिलाई ॥ आनन्दसागर पृष्ठ ५१

को शिशुपाल ते राखेउ जगन्नाथ प्रभु धाई । दीन
सुदामा को दुख टाखो धनि चरणन बलि जाई ॥ ४॥२ ॥
रे मन श्याम चरण भजि लीजे ॥

धु० ॥ आठ पहर में एक घड़ी हू । हरि के भजन चित
दीजे ॥ १ ॥ या जग में कोउ संग न जैहै । हरि के
बिमुख क्या जीजे ॥ २ ॥ नाम जपत भवसागर तरिहै ।
यह उपदेश पतीजे ॥ ३ ॥ जगन्नाथ येही वर माँगे ।
भक्त अभय प्रभु कीजे ॥ ४ ॥ ३ ॥

नखे पर गिरिवर धारि के ठाढ़े नंदलाला जी ॥
इन्द्र महा भर लावहीं व्याकुल ब्रजबाला जी ॥ धु० ॥
सात दिवस भर घोर में गिरिवर हरि धारा जी ॥ नेकु न
दुख कोउ पावहीं यदुनाथ उबारा जी ॥ १ ॥ भूख नहीं
नहीं प्यास है हरिपद चित धारा जी ॥ राखनिहार गोपाल

१ यह छवि बसी हमारे मन में । रामबकस कृत आनन्दसागर ॥

२ शम्भु शरासन हाथ लिये ठाढ़े दूनों भाई जी ॥ तुलसीकृत आनन्दसागर

हैं उनके शिर भारा जी ॥ २ ॥ गर्व हस्यो जब इन्द्र को
गिरिवर को उतारा जी ॥ हाथ जोरि मधवा कहे तुम
सन मैं हारा जी ॥ ३ ॥ मातु दबावत हाथ को दुख
सहो है अपारा जी ॥ जन जग्रनाथ गोपाल के जो हैं
प्रभु संसारा जी ॥ ४ ॥ ४ ॥

बधाई राग सोरठ

श्रीनंद गृह जन्मे कृष्ण कन्हैया ॥ ध्रु० ॥ प्रगट भये
प्रभु मुरली मनोहर । काली नाग नथैया ॥ १ ॥ नंद
बवा तो मोहरें लुटावत । यशुदा जी लेति बलैया ॥ २ ॥
आरति साजि सखिन सब गावति । धनि हरि ब्रज के
बसैया ॥ ३ ॥ जन जग्रनाथ शरण मन मोहन । हर्षित
गावे बधैया ॥ ४ ॥ ५ ॥

गीतगोविन्द राग ललित

भज राधाकृष्ण नंदसुअन गिरिधारी ॥ ध्रु० ॥ मोर
मुकुटधर बनमालाधर पीताम्बर तन के धारी ॥ हाथ

१ जवाब ॥ सोच ले रे शठ अपनी कमैया ॥ आनन्दसागर रामदास कृत ॥

२ भज राधाकृष्ण मोहन मदन मुरारी ॥ आनन्दसागर सूरदास कृत ॥

लकुटधर बंशी सुन्दर कुंडल शोभा है भारी ॥ १ ॥ माखन
चाखें डरते राखें सीकन ऊपर सब ग्वारी ॥ लीला अमित
करें ब्रज माहीं त्रिभुवन ठाकुर तनधारी ॥ २ ॥ नन्द-
राय की गाय चरावें मोहें सब ब्रज की नारी ॥ ग्वाल
बाल सँग बन में डोलें बन के बासी बनवारी ॥ ३ ॥
बृन्दावन में रास करैं प्रभु शोभित सँग राधा प्यारी ॥ बसो
युगल मूरति मन मेरे जगन्नाथ जन बलिहारी ॥ ४ ॥ ६ ॥

होली ताल धमार काफ़ी

कापै डारिये एरी बताय बीर रंग श्याम बिना ॥ ध्रु० ॥
ब्रज तजि गे घनश्याम सखिन पछताती हैं री । विरह
बिथा न सहाति अधिक दुख पाती हैं री ॥ बंशी धुनि जब
श्रवन सुनन सुधि आती है हरि की । हरदम याद
आती है छबि नटवर नागर की ॥ १ ॥ फागुन धूम
मची कुब्जा मदमाती है री । मोहन पै रंग डार अधिक
सुख पाती है री ॥ हे मधुकर तुम श्याम सम कहु बात
मित्रकी । वह छाँड़ेंगे कुब्जा को कैधों छाँड़ेंगे गोपी ॥ २ ॥

१ जवाब ॥ कासे खेलिये एरी बताय बीर रंग फागुन में ॥

नूतन नेह लगाइ प्रेम का दूटे है री । हम को
 त्यागन कीन्ह चेरि मुख लूटे है री ॥ पहिले प्रीति लगाइ
 के नित हरि ऐसे मुख कीन्ह । सखि को जाने गति
 बिधना की जो अब ऐसे दुख दीन्ह ॥ ३ ॥ जगन्नाथ
 के नाथ बिना हम व्याकुल हैं री । कुब्जा करै नित
 भोग हमहिं बिरहाकुल हैं री ॥ बारि उमर में प्रीति करि
 तुम क्यों त्यागी गोपी । अब छांड़ि दीजे चेरी को दर्शन
 दीजे हरी ॥ ४ ॥ १ ॥

होली राग सारंग

कन्हैया आय मिले बन में सब ग्वालन संग ॥ ध्रु० ॥
 मधुर मधुर मुरली मुख बाजे । श्याम सलोने अंग ॥ १ ॥
 सखिन सहित राधा इत आई । दुहुँ दिशि डारत रंग ॥
 २ ॥ अबिरनते तन लाल भयो है । बजवत ताल
 मृदंग ॥ ३ ॥ जन जगन्नाथ कहा छवि बरने । लाजत
 कोटि अनंग ॥ ४ ॥ २ ॥

१ श्यामा श्याम से होरी खेलत आज नई ॥ अनुरागलतिकी ॥

बारह मासा मलार

चलहु भवन तजि री द्वारिका को जहवां मिलहिं
 ब्रजराज ॥ ध्रु० ॥ उमड़ि घुमड़ि बादल गरजत ।
 आयो मास असाढ़ ॥ सखि री सावन मन तरसावन ।
 भादौं अति जल बाढ़ ॥ १ ॥ आश्विन मास कनागत ।
 कातिक में सोहराई ॥ सबहि गये आयो अगहन । नहिं
 आये यदुराई ॥ २ ॥ दिन दिन ठंढ परन लागी ।
 लाग्यो पूस को मास ॥ माघ बसन्त न भावत । फागुन
 लागे उदास ॥ ३ ॥ चैत चित्त नहिं लागत । रहि
 बैशाख अनाथ ॥ जेठ में भेंट पाइ हर्षित । मिले जगनाथ
 के नाथ ॥ ४ ॥ १ ॥

ठुमरी राग भैरवी

नहिं केवल ब्रज में मुरारी बसैं । सब जीवों में गिरि
 वरधारी बसैं ॥ ध्रु० ॥ जित देखों उत वाही देखों ।

१ जवाब ॥ सुनली कन्हैया मोरा हे योगी भेल ॥ सूरदासकृत
 अनन्दसागर ॥

२ बेला में अलबेला बसैं बेली में नई अलबेली बसैं ॥ नगमे दिलकश ।

तन मन में बनवारी बसैं ॥ १ ॥ दर में घर में डगर
नगर में । सबही में बंशीधारी बसैं ॥ २ ॥ जल में थल
में सुर नर पुरमें । संग में राधा प्यारी बसैं ॥ ३ ॥ जन
जग्रनाथ कहा यम ते डर । मनमें जो राधा बिहारी
बसैं ॥ ४ ॥ १ ॥

टप्पा राग नट

भर्वसागरतरने की नाव विदेशी काहे तजे ॥ ध्रु० ॥
याकी नाव नाम यदुपति को ॥ निशि दिन क्यों न
भजे ॥ १ ॥ जग में जीवन चारि दिना को ॥ फिर डफ
कूच बजे ॥ २ ॥ जन जग्रनाथ भजन जहँ हरिके ॥
सब सुख जगके सजे ॥ ३ ॥ १ ॥

दंधि मटुकी शिर धारि ग्वालिन बेचे चली ॥
ध्रु० ॥ शिर सेंदुर नकबेसर शोभे ॥ शोभित चम्पकली ॥
१ ॥ सुखमा ललिता औ चन्द्रावलि ॥ औ वृषभान-

१ घर रोवे कतरनी पान तमोलिन गौने चली ॥

२ अर्थात् १६ शृंगार करिके ॥ घर रोवे कतरनी पान तमोलिन
गौने चली ॥

लली ॥ २ ॥ बीच मिले श्री कृष्ण कन्हैया ॥ देहु मोर
दान अली ॥ ३ ॥ तुम कान्हा कब के भयेदानी ॥ कंस
ते देह पली ॥ ४ ॥ बड़े साधु भै नन्द यशोदा ॥ तुम
हो कान्ह छली ॥ ५ ॥ हम त्रिभुवन के नाथरी
ग्वालिन ॥ कंस कहां को बली ॥ ६ ॥ लजित है सखियां
दधि लाईं ॥ जहँ सुरनाथ दली ॥ ७ ॥ जन जग्रनाथ
दही हरि खाये ॥ आये कुंजगली ॥ ८ ॥ २ ॥

खेमटा ।

कहीं आवत हैं बनमाली री कोइ देखो यमुन ॥
ध्रु० ॥ राधा कहति श्याम छवि निरखत ॥ येही मेरो
बड़ नीक शगुन ॥ १ ॥ करि शृंगार बाट हरि जोहति ॥
चारिवेद को करि के चगुन ॥ २ ॥ धनि धनि राधा धनि
चन्द्रावलि ॥ धनि ललिता हरि प्रेम निपुन ॥ ३ ॥
धनि जग्रनाथ नैन भरि देखत ॥ कौन कहै ब्रज बालन
पुन ॥ ४ ॥ १ ॥

का करि है कोई बैरी हो मैं तो दास गोविन्द ॥ ध्रु० ॥
ओभाड़ा इन औ करतूती ॥ सब पड़ि जैहँ नरक के

१ अर्थात् १६ शृंगार कर के ।

फन्द ॥ १ ॥ इहां छिपाइ के बान चलै हैं ॥ वहां कहो
 बचि हैं कैसे मन्द ॥ २ ॥ कोइ करतूत हमें ना लगि है ॥
 उलटा करि है ताको निकन्द ॥ ३ ॥ जगन्नाथ जैसे गज
 को बचायो ॥ वैसे बचै हैं हमें कृष्णचन्द ॥ ४ ॥ २ ॥

यह दुनियां बड़ि खोटी हो कोई काहू को न मीत ॥
 धु० ॥ जो प्यारा सो हो जाय बैरी ॥ जो बैरी सो
 होजाय हीत ॥ १ ॥ जो माने ताको नहिं माने ॥ नामाने
 ताहि से बात चीत ॥ २ ॥ जा से मेल ताहि से खटपट ॥
 अच्छन को छांड़े लुचन से प्रीत ॥ ३ ॥ या जग में सब से
 मिलि रहिये ॥ येही सबै अच्छेन की रीत ॥ ४ ॥ जगन्नाथ
 नहिं तनको भरोसा ॥ गिरिजै है जैसे बालू की भीत ॥ ५ ॥ ३ ॥

غزلیات

شعر

شاعری ساکب مزا کس کام میں کس کو ملا
اہنس ہوتی ہوا فزون خواہش گفتن و لا

غزل اول

۱۔ دل نصیحت گوش کن سرکیشان گو سرکیشان گو
انسان بنیاد خطا کن از پے عفو و عطا
سرکیشان گو سرکیشان گوار دے گئے غافل مشو
گو عمر تو نگذشت تراز دور و دھرا آید خطر
از خواب غفلت ہوش کن سرکیشان گو سرکیشان گو
ہر دم عبادت التجا سرکیشان گو سرکیشان گو
آید نہ غم نزدیک تو سرکیشان گو سرکیشان گو
ناگہ بود کردن سفر سرکیشان گو سرکیشان گو

گر رنگاری از زمین خواہی ہمین تدبیر کن
گوید جگن ناتھ این سخن سرکیشان گو سرکیشان گو

غزل دوم

رستہا نہیں دن ایک ساگا ہے چین گاہے چنان
اکدن جو خود مختار ہے منعم ہے اور زردار ہے
جہاد و حشم حاصل کیا مغرور ہے کیا بے حیا
گر ہے خوشی اکدن یہاں رہتی ہے یہ ہر دم کہن
ایسی ہے یہ فانی سرالازم ہے کر شکر خدا
یان کا یہی ہے ماجرا گا ہے چین گاہے چنان
اکدن وہ مغس خوار ہے گا ہے چین گاہے چنان
پھر جانشین ہے دوسرا گا ہے چین گاہے چنان
یک روز ہے آہ و فغان گا ہے چین گاہے چنان
یہ جگن ناتھ کہیے بجا گا ہے چین گاہے چنان

غزل سوم

مت بھول دنیا میں دلایہ شان و شوکت چار دن
سب پر عیان ہے ہر زمان کہ بدلتا ہے رنگ جان
ہو گوشہ تن سے بھلا جس دم یہ مرغ جان ہوا
کر ہر نفس یا دہری حاصل ہو جس سے بہتری
یہ جگن ناتھ کہیے سخن کفضل ای شاہ زمین

آخر کو تو ہوگی فنا یہ مال و دولت چار دن
گر عیش ہر اک دن یہاں پھر پنج غربت چار دن
ہو کون بھرا ہی ترایہ ساتھ و الفت چار دن
سامان کر عقیقی کا بھی یہ جان فرصت چار دن
کر دور سب پنج و محن حاصل ہو عشر چار دن

غزل چہارم

اجودھی پت کے آگے جس نے زور تن دکھایا ہے
جناب جانکی کو لے کے جب لٹکا گیا راون
یہ نفیشت ہنمان جری کو رام نے بھیجا
مجھے بھگونت نے بھیجا میں ہوں ہنومت ای ماما
کما کھا لو پھل بستان کہو رگھوین کیوں غافل
جو پایا حکم ہنومت نے اُجاڑا باغ راون کا
خبر دی جا کے جسد رام لیکر فوج چڑھ آئے
بھبھیکن کو دیا تخت اور سیالیکے او دھ آئے

بجائے خود سری خود پس نے بارِ غم اٹھایا ہے
تو گلشن میں ٹھہر رہا شکر نے ڈرایا ہے
سمندر بھاند کے پونچھے و حال اپنا سنا ہے
لگی ہے بھوک شدت سے مگر ہی مجھ کو بھایا ہے
کہا جلد آئیں گے یوں کہے غم اُن کا مٹایا ہے
تم کھا کر کے شہر و قصر کو اُس کے جلا یا ہے
ہوا مقتول راون سرکشی کا پھل یہ پایا ہے
جگن ناتھ اپنے داسوں پر ہمیشہ اُنکی دایا ہے

غزل پنجم

گمان ہے شام کو منظورِ دلِ دل آزمائی ہے
اگلا دل جس کا موہن پر ہوا جب وہ بہت مضطر

کبھی کرنا وفاداری کبھی پھر بیوفائی ہے
تو ہر نے اُس پہ خوش ہو کر دیا اپنی دکھائی ہے

کہا اُو دھونے ما دھو سے کہ ہیں سب گویاں مُضطر
یہ سنکر بہر رہے اگر کے برندا بن میں مٹھارے
کنھیا رنج سے غم سے جکدنا تھاب ہوا عاجز

تھارے ہجر میں سب نے بہت زحمت اٹھائی
چتر بن کے جا کر دوار کا اُس دم بسائی
کر و سب دور رنج و غم تھین سے لو لگائی

غزل ششم

دلہم مشتاق دیدارِ جمالِ یارِ می ماند
خیالِ ابرسانِ رنگِ تن درویشِ حوی آید
پُر آفتِ وادیِ عشقِ ست آسائش درین مشکل
نہ آسانست تسخیرِ خیالِ حُسن و لہر را
جکدنا تھاروے بخوای چون زوئی خیالش کن

ہمیشہ منتظرِ لطف و نوالِ یارِ می ماند
فزون تر شوق دیدار و مقالِ یارِ می ماند
دلِ مضطر بتفتیشِ کمالِ یارِ می ماند
کُند آن کو ہمیشہ در خیالِ یارِ می ماند
کہ دلبر ہرنہ گر غافل ز حالِ یارِ می ماند

غزل ہفتم

ای یارِ بر این طالب دیدارِ نظر کن
بخشد کہ دوائے مرضِ عشقِ بھر تو
افتاد نہ چون من کسے در دامنِ عشق
مُضطر ز غمِ ہجر کسے شد نہ تراز من
از حالِ جکدنا تھ خیریت چہ بر تو

بر حالِ من عاشقِ ناچارِ نظر کن
بر حالتِ رنجور و فادارِ نظر کن
در عشقِ تو اُم تازہ گرفتارِ نظر کن
ای غافلِ دلدارِ بہ غمخوارِ نظر کن
کن شاد و ز دیدارِ بر این ارِ نظر کن

غزل ہشتم

لیا تو نے جو دل میرا وفا سے

بچا یا رنج سے غم سے بلا سے

پھر امین کیا رہ صدق مصفا سے	کہ ہوں محروم رحمت سے عطا سے
نہ کر کشتہ نہ گئے تیغ جفا سے	
ہوا پروانہ میں تجھ شمع رو پر	فدا ہوں تیری زلف مشکبہ پر
امین ہوں مفتون تری چشم و گل پر	میں ہوں قربان تیرے حسن و خو پر
نہ کر کشتہ نہ گئے تیغ جفا سے	
برنگ ابر تیرا رخ ہے انور	نہایت خوشنمازیبا و بہتر
نہ لاثانی کردن میں کیوں تصور	کہ ہے تو مالک کونین داور
نہ کر کشتہ نہ گئے تیغ جفا سے	
نخل قوس قزح ابرو کی چین سے	عیان نور و فالوح جبین سے
نظر کی جس پہ رحمت کر کہیں سے	تو بھاگا درد و غم اسکے قرین سے
نہ کر کشتہ نہ گئے تیغ جفا سے	
نمایان چشم مثل چشم آہو	عجب چتون میں ہی موہن کے جاو
پڑی جس کی نظر بھر تو وہ خوشخو	گا پھر نے پے دیدار ہر سو
نہ کر کشتہ نہ گئے تیغ جفا سے	
ترے دام عشق میں جکڑنا تھا	پھنسا ہے عالم طفلی سے اے ناتھ
خبر گیری ہی میری اب ترے ہاتھ	یہی ہی آرزو رکھ تو مجھے ساتھ
نہ کر کشتہ نہ گئے تیغ جفا سے	

نامہ ادت پرشاد تائید نشی بشن پرشاد صاحب وکیل و جواب منجانب
وکیل موصوف تصنیف مصنف کتاب ہذا بحر چارہ سال در فارسی

نامہ تائید

کہ بہت آقاے راقم صاحب داد
و نامش مشہر تر دیک و ہم دور
کنی از راہ لطف و شفقتم یاد
گذشتہ روز من خیر از ہمہ حال
گمان دارم ز تو مخفی نباشد
عزیز از جان ترا و را بدانم
بدرگاہ پور شادی بہت اورا
بری تشریف خود تو ہر مکانم
ز من دشوار بہت آن ای کو خو
پسر را تو اجازت دہ شتابی
نشاط و قدر افزائی کند او
عنایت کن کہ باشدت مہیا
شوم را ہی بسوے خویش خانہ
تو میدانی ترا ز ہر چہ کہ گویم

بہالی قدر نشی بشن پرشاد
پو حاتم در سخاوت اوست مشہور
کند این التجا ادت پرشاد
ملازم ام بدر بارت زدہ سال
نہتے بر سرم در پیش آمد
برادر زادہ نورنگی کہ دارم
درین مہ کتختانی بہت اورا
تولا کر و فاق جاد و انم
کہ کار یکہ شود انجام از تو
اگر فرصت نباشد از کچہری
کہ رفتہ بزم آرائی کند او
برائے رونق بارات اشیا
اجازت دہ مراد و زد و شبہ
چہ دیگر عرض من سازم چہ گویم

جگننا تھو این نموده نظم فی الحال

چو اوت شد مہر کن نظم این حال

جواب ویل

الہی واروت خرسند وائم
بدینا میدہر تکلف لاحد
بجایش هست در آفاق گرما
ترا باید کنی ناراضگی دور
و ہر دو اسپ خود ہمراہ او شان
بہمراہت ہمہ آن می فرستم
حفاظت داشتن امر مناسب
بشادی خاطر مگر و نہ ناشاد
اجازت می شود شوز و در اہی
درینجا آمدہ کن کار خود پیش

بخواندم نامہ ام بسیار خرم
وفا دارم پیش و در پیش آمد
چو دید شدتش بگرخت سرما
ازین باعث بسا ناچار و مجبور
بجائے خود فرستم دو محبان
و گراشیائے ہم انچہ کہ دارم
ترا نگرانے اشیاست واجب
کہ از کس مال من گرد و نہ بر باد
برائے رفتن مسکن نوشتی
پس از انجام کار خانہ خویش

بیا سخ این گفتش بشن پرشاد
جگننا تھو این نوشت از حکم او شاد

لہ یعنی بارشاد پدر خود نظم کرد ۱۲

تمام شد